B.A Part-II (H) Paper IV - History -

युरोपीय व्यवस्था
The Concert of Europe 1815-1825

1799 से 1814 तक नेपोलियन ने यूरोप में शान्ति को भंग किया था। मित्र राष्ट्रों ने पारस्परिक सहयोग से नेपोलियन को पराजित किया तथा वियना काँग्रेस के द्वारा यूरोप की पुनर्व्यवस्था की गयी। किन्तु यूरोपीय देश यूरोप में स्थायी शान्ति चाहते थे। अतः यूरोप में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने, विजेता व्यवस्था को अक्षुण्ण रखने तथा क्रान्तिकारी विचारों के दमन हेतु एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता थी। यद्यपि यह विचार यूरोप की कूटनीति के लिये नया था क्योंकि ऑस्ट्रिया के प्रधान मंत्री आदि का नेता (Kaunitz) ने 1781 में रूस की भूमिका का एक पत्र तैयार की थी। उसने यूरोपीय शासकों को एक पत्र भेजा था, जिसमें उसने संयुक्त रूप से क्रान्ति का विरोध करने का सुझाव दिया था। नेपोलियन को हराने में मित्र राष्ट्रों का सहयोग था। अतः इन देशों का उपयोग से लगी कर सकते थे, इस बात का उपयोग से लगी कर सकते थे, शान्ति काल में भी एक दूसरे के साथ सहयोग करते रहे। इन्हीं परिस्थितियों ने यूरोपीय व्यवस्था को जन्म दिया। इसके लिये वियना काँग्रेस में दो योजना प्रस्तुत की गई। एक रूस के जार अलेक्जेंडर प्रथम का पवित्र संघ और ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिक का चातुर्मुख संघ।

① Holy Alliance ② Quadruple Alliance.

पवित्र संघ Holy Alliance -

पवित्र संघ की उत्पत्ति रूस के जार अलेक्जेंडर प्रथम के व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरूप हुई थी। वह एक धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह फ्रांस की क्रान्ति का धर्म विरुद्ध

Scanned with CamScanner

[illegible] का [illegible] नामक [illegible] एवं [illegible]
[illegible] के [illegible] के प्रसार की [illegible] से [illegible]
यूरोप के [illegible] शासकों का एक संघ बनाकर
[illegible] को [illegible] करने के [illegible] के
[illegible] पर [illegible] और [illegible] में [illegible]
भावना जगाने [illegible] के लिये [illegible]
यूरोप में शान्ति बनी रहे। अतः उसने यूरोपीय
राज्यों [illegible] के सम्बन्धों को ईसाई धर्म के [illegible]
की भावना के अनुकूल [illegible] करने का प्रस्ताव
[illegible] एवं शान्ति की [illegible] और इसका नाम
एक घोषणा के रूप में [illegible] सभी राजाओं से
पवित्र संघ दिया। उसने यूरोप के [illegible] कर इस
पोप और तुर्की के सुल्तान को छोड़कर
राज्यों ने पर हस्ताक्षर करने [illegible]
आमंत्रित किया। रूस, प्रशा और आस्ट्रिया ने
इस पर तुरन्त हस्ताक्षर कर दिये। [illegible] गया
की वैधानिक अड़चन का बहाना [illegible] ने ईश्वर [illegible]
कर इस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर
[illegible] ने [illegible] को [illegible]
[illegible] राजनीतिज्ञों का बहुत कम
मिला। परन्तु पवित्र संघ पर [illegible] पवित्र संघ को
विश्वास था। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से पवित्र संघ को [illegible]
आदर्श योजना कहा जा सकता है, किन्तु उसका
व्यावहारिक महत्व नगण्य था। [illegible] ने
इसे [illegible] और [illegible] की ओर [illegible] करने
वाली योजना कह कर उपहास किया। [illegible] ने इसे
"[illegible] की [illegible]" कहा। कैसलरे ने [illegible]
में गढ़ "उत्कृष्ट रहस्यवाद [illegible]" [illegible]
इतिहासकार [illegible] ने [illegible]
करते हुए लिखा है कि "[illegible] पवित्र संघ के
[illegible] का [illegible]
[illegible] शरीर की [illegible]

हेज ने कहा " 19वीं शती के उदारवादियों के विचार में पवित्र संघ प्रजातंत्र, राष्ट्रीयता, तथा सामाजिक न्याय को नष्ट करने का एक षड्यन्त्र मात्र था।"
इतिहासकार केटेलबी के शब्दों में " फिर भी यह एक शताब्दी तक यह पवित्र संघ निरंकुशता और दमन का प्रतीक है, जिसका बोलबाला इस समय यूरोप में रहा। किन्तु यह पवित्र संघ नहीं, अपितु इसी वर्ष के बने चतुर्मुखी संघ के परिणामस्वरूप था। पवित्र संघ को जनता का भी समर्थन प्राप्त नहीं हो सका। इसका जन्म ही शंका के वातावरण में हुआ था। अतः यह थोड़ी आयु का शिशु साबित हुआ। 1825 तक यह नाममात्र के लिये कायम रहा और अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद इसका अन्त हो गया।"

अर्पणा